# अध्याय 6

# उपसंहार

## अध्याय 6

## उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के प्रयोगशील नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनकी प्रयोगशीलता उनके प्रत्येक नाटक में कथ्य, वस्तु, शिल्प और मंच के रूप में प्रचुर मात्रा में नजर आती है। उनके अधिकतर नाटकों की कथावस्तु पृष्ठभूमि के रूप में ऐतिहासिक होकर भी उन्होंने उसमें आधुनिक समाज जीवन को ही साकार किया है। उनके 'सेतुबंध', 'आठवाँ सर्ग,' और "नायक खलनायक विदूषक" गुप्तकालीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। "सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक" नाटक सामंतकालीन इतिहास से संबंधित है लेकिन यह नाटक ऐतिहासिक नहीं है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर नाटककार ने आज के जीवन संदर्भ को ही अभिव्यक्त किया है। इन नाटकों में मुख्यतया वैवाहिक समस्या, स्त्री-पुरूष कामसंबंध समस्या, नियोग पद्धति की नयी व्याख्या, कलाकार की विवशता, साहित्यकार की प्रतिबद्धता तथा साहित्य में श्लील-अश्लीलता का प्रश्न आदि समस्याओं को नाटककार ने आधुनिक जीवन संदर्भ में चित्रित किया है। आज के परिवर्तित जीवन को, मूल्यों को और विसंगति को उन्होंने यथार्थ के नग्न रूप में ही प्रस्तुत किया है। महानगरीय जीवन का चित्र तो बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। "द्रौपदी" और "एक दूनी एक" नाटक मुख्यतया महानगरीय जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। इन नाटकों में नाटककार ने आज के स्त्री-पुरूष संबंधों को नये ढंग से प्रस्तुत किया है साथ-ही-साथ आधुनिक नारी की स्वच्छंदता, युवा पीढ़ी की स्वैराचारिता, आर्थिक कमाई के नये तरीके आदि बातों को आज के जीवन के साथ जोड़ दिया है।

आधुनिक युगबोध का विशालपट उनके सामने जरूर है लेकिन उन्होंने अपने प्रत्येक नाटकों में किसी-न-किसी बहाने "सेक्स" को अवश्य चित्रित किया है। उनके सभी नाटकों का अभिनव सूत्र "सेक्स" चित्रण है। कदाचित "सेक्स" सबका प्रिय विषय होने के कारण और आज समाज में खुलकर सेक्स के दर्शन होने की वजह से ही उसको उन्होंने बड़ी मात्रा में चित्रित किया है।

"छोटे सैयद बड़े सैयद" उनका उत्तर मुगलकालीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया राजनीतिक उथल-पुथल और भ्रष्टाचार का जीता जागता चित्रण प्रस्तुत करनेवाला विशिष्ट प्रयोग है। पूरे नाटक में उत्तर मुगलकालीन कठपुतली बादशाहों की विलासिता और दयनीय स्थिति तथा अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली की कुटिल राजनीति को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक के माध्यम से आधुनिक राजनीति की झाँकी प्रतिबिंबित होती है।

मिथक किसी भी देश के जातीय संस्कृति के वाहक होते हैं और इसी कारण कोई भी सजग साहित्यकार मिथकों की ओर अनायास आकृष्ट होता है। सुरेंद्र वर्मा भी भारत के अतीत की ओर आकृष्ट होकर उन्होंने कालिदास मिथक के द्वारा आज के साहित्यकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला है। नाटक के नामकरण "द्रौपदी" के माध्यम से सुरेखा को महाभारतकालीन द्रौपदी के संदर्भ में दिखाकर एक ही पुरूष (मनमोहन) के पाँच विभाजित रूपों के साथ लड़ने झगड़ने और टूटनेवाली आधुनिक द्रौपदी को चित्रित किया है। "सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक" नाटक में प्राचीन नियोग पद्धति के द्वारा नपुंसक पुरूष के साथ विवाह होने पर कुलीन स्त्री की दबी हुयी यौनेच्छा स्फुलिंग के रूप में कैसे प्रकट होती है और एक बार अन्य पुरूष से कामसंबंध स्थापित होने पर उसके जीवन मूल्य कैसे बदलते हैं, यह नाटककार ने दिखाया है। आज की स्त्री मातृत्व की अपेक्षा रति सुख को ही सबकुछ मानती है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के पात्र आज के युगबोध को वाणी देनेवाले सच्चे पात्र हैं। उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों को भी आधुनिक मानव जीवन के संदर्भ में ही चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनके कालिदास, ओक्काक, शीलवती पात्र विशेष उल्लेखनीय हैं। ओक्काक की नपुंसकता, शीलवती की अदम्य कामसुख लालसा, कालिदास का अपमान, मनमोहन का चार नकाबवाला रूप, आधुनिक द्रौपदी के रूप में सुरेखा, आदमी और औरत का असंगत जीवन-उन पात्रों की मानसिक दशाओं का यथार्थ चित्रण है। नाटककार ने लघु मानव के अंकन में कपिंजल, प्रियंवदा, अनसूया, महत्तरिका, कीर्तिभट्ट, भाँड नक्काल और बहुरूपिया आदि को चित्रित करने में ~~नाटककार~~ अपनी दिलचस्पी दिखायी है। लघु मानव का अंतरंग जानने की दृष्टि से इन पात्रों का महत्त्व निर्विवाद है।

मनोविज्ञान की कसौटी पर सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के पात्र खरे उतरते हैं। क्या ओक्काक क्या शीलवती, क्या प्रवरसेन क्या प्रभावती, क्या कालिदास क्या प्रियंगुमंजरी, क्या अब्दुल्ला खाँ क्या हुसैन अली, क्या सुरेखा क्या मनमोहन, क्या आदमी क्या औरत - सभी पात्र मानवीय हैं और उन सबका क्रियाकलाप भी मानवीय है। यहाँ मानव की विविधता, विचित्रता और विद्रूपता यथार्थ में साकार हुयी है। पात्रों के खण्डित व्यक्तित्व अंकन में भी नाटककार की प्रयोगधर्मिता सहज ही अनुमेय है। नाटककार ने अपने नाटकों में स्वप्न मनोविज्ञान का भी कलात्मक ढंग से निर्वाह किया है। आधुनिक युगबोध को संप्रेषित करने की क्षमता सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के पात्र सृष्टि में निसंदेह है। नाटक में पात्रों

की संख्या सीमित हो इस परंपरागत सिद्धांत को नाटककार ने ठुकराया है। "छोटे सैयद बड़े सैयद" इसका अच्छा उदाहरण है। पात्रों के नामकरण में भी नाटककार ने भी अभिनव प्रयोग किये हैं।

शिल्प और रंगमंच के प्रयोग भी नाटककार की अपनी विशेषता है। उनके नाटकों के संवादों में विविधता है। उनके नाटक अदालती संवाद, सांकेतिक संवादशिल्प, सूच्यात्मक खण्डित संवाद, आदि से युक्त हैं। ये संवाद नाटकीय हैं। नाटककार ने संवादशिल्प में पात्रों की मनःस्थिति, उनका कार्यव्यापार दिखाने के लिये विशिष्ट विराम चिन्हों, विशिष्ट संकेतों का निर्देशित किया है। सांकेतिक सूच्य खण्डित संवादों के उत्कृष्ट उदाहरण "सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक", "आठवाँ सर्ग" और "एक दूनी एक" हैं। संवाद-संप्रेषण में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग वस्तुनिष्ठ है।

"छोटे सैयद बड़े सैयद" में नाटककार ने उर्दू का सर्वाधिक प्रयोग करके भाषा शैली के क्षेत्र में क्रांति कर दी है। इतना ही नहीं ऐतिहासिक राजनीतिक शब्दावली, कामसंबंधी शब्दावली का प्रयोग अनूठा है। काव्यात्मक, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, प्रश्नार्थक भाषाशैली का प्रयोग उन्होंने अपने नाटकों में किया है। पत्रात्मक पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग अभिनव है। उनके नाटकों की गीत संरचना पूरी तरह से व्यंग्यात्मक है। आज के जीवन की विडंबना प्रस्तुत करने में सक्षम है। जयशंकर प्रसाद और हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों के गीतों से पूर्णतया अलग है। "सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक" नाटक में यौन प्रतीक और बिंबों का सार्थक प्रयोग नाटककार की अपनी विशेषता है।

सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटक रंगमंच पर खेले गये हैं। दृश्यबंध, मंचसज्जा, पात्रों की वेशभूषा और अभिनेयता की दृष्टि से अपनी विशिष्टता रखते हैं। नाटककार ने कुछ रंगसंकेत अपने नाटकों में अवश्य दिये हैं लेकिन पात्रों के वेशभूषा के बारे में स्पष्ट संकत नहीं दिये है; इसका कारण यह भी हो सकता है नाट्य प्रस्तुति में नाट्य प्रस्तुति करनेवालों को छूट दी जा सकती है ताकि वे अपनी कल्पनाशीलता और प्रभान्विति की दृष्टि से पात्रों की वेशभूषा समादृत कर सके। भारत के टैगोर थिएटर" चण्डीगढ, "अनामिका" कलकत्ता, "थियेटर युनिट" बम्बई, "दिशान्तर" दिल्ली, "कन्नड साहित्य कलासंघ" बैंगलोर, "दर्पण" पटियाला, "नाट्यायन" ग्वालियर, "सिंधी कला संगम" दिल्ली आदि नाट्यसंस्थाओं ने उनके नाटकों के कुछ प्रयोग किये हैं जो नाट्य प्रस्तुति की दृष्टि से अपना अलग महत्त्व रखते हैं।

अभिनय की दृष्टि से उनके सभी नाटक सफल हैं। चार नकाबों से युक्त मनमोहन पात्र का अभिनय विशेष उल्लेखनीय है जो मोहन राकेश के "आधे अधूरे" नाटक के महेंद्रनाथ के पुरूष एक, दो, तीन, चार की याद दिलाता है। "द्रौपदी" नाटक की सुरेखा नाटककार ने आधुनिक द्रौपदी के रूप में चित्रित की है। यह सुरेखा अर्थात द्रौपदी मोहन राकेश के "आधे अधूरे" नाटक की सावित्री की अगली कडी है। "सेतुबंध", "छोटे सैयद बड़े सैयद" नाटक में मूकाभिनय का प्रयोग भी दर्शकों, पाठकों का

ध्यान आकृष्ट करता है।

एक ही रंगमंच पर प्रकाश योजना के माध्यम से दो विरोधी दृश्यों का व्यात्मक आयोजन (सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक) नाटककार की अपनी सूझ है। प्रकाश, ध्वनि एवं संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग नाटककार की विशेष मंचीय उपलब्धि है। प्रकाश, ध्वनि एवं संगीत योजना में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग विशेष सहायक है। दृश्यबंध और मंचसज्जा के विशिष्ट प्रयोगों में 3। दृश्यों वाला "छोटे सैयद बड़े सैयद" और बारह दृश्यों वाला "एक दूनी एक" विशेष उल्लेखनीय हैं। दर्शकों और पाठकों में गहरी संवेदना निर्माण करने में सुरेंद्र वर्मा के नाटक बड़े ही सक्षम हैं।

संक्षेप में, सुरेंद्र वर्मा वस्तु, शिल्प और मंचीयता के क्षेत्र में व्यापक रूप में भिन्न भिन्न प्रयोग करने वाले एक कुशल तथा बुद्धिजीवी एवं प्रथितयश प्रयोगशील नाटककार हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


अ) उपजीव्य ग्रंथ –

हिन्दी –

1. आठवाँ सर्ग – सुरेंद्र वर्मा
2. एक दूनी एक – सुरेंद्र वर्मा
3. छोटे सैयद बड़े सैयद – सुरेंद्र वर्मा
4. तीन नाटक (सेतुबंध, नायक खलनायक विदूषक, द्रौपदी) – सुरेंद्र वर्मा
5. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक – सुरेंद्र वर्मा

आ) संदर्भ ग्रंथ –

हिन्दी –

1. आज के हिंदी रंग नाटक : परिवेश और परिदृश्य – जयदेव तनेजा
2. आधुनिक साहित्य – नंददुलारे वाजपेयी
3. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम – डॉ. लक्ष्मीराय
4. आधुनिक हिंदी नाटक: एक यात्रा दशक – डॉ. नरनारायण राय
5. आधुनिक हिंदी नाटक में संघर्षतत्त्व – डॉ. ज्ञानराज गायकवाड
6. आधुनिक हिंदी नाटक : भाषिक और संवादीय संरचना – गोविंद चातक
7. कोणार्क : रंग और संवेदना – डॉ. नरनारायणराय
8. तारसप्तक – अज्ञेय
9. नयी कविता के प्रतिमान – लक्ष्मीकांत वर्मा
10. नयी कहानी के विविध प्रयोग – डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु
11. नाटक और रंगमंच – संपा. डॉ. शिवराम माळी
12. नाट्य चिंतन : नये संदर्भ – डॉ. चंद्र
13. नाट्य परिवेश – कन्हैयालाल नंदन
14. प्रसाद का नाट्य साहित्य : परंपरा एवं प्रयोग – डॉ. हरीन्द्र
15. प्रसादोत्तर हिंदी नाटक – आस्वाद के धरातल – डॉ. सुंदरलाल कथूरिया
16. भारतीय मनोविज्ञान – डॉ. यदुनाथ सिन्हा, अनुवाद – गोविंदप्रसाद भट
17. मिथक और साहित्य – डॉ. नगेंद्र
18. मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक – रमेश गौतम
19. यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण – डॉ. मधुकर जैन

20. रंगमंच और कलादृष्टि : गोविंद चातक

21. वात्सायन कामसूत्र – हिंदी अनुवाद – बिपिनचंद्र बंधु

22. समकालीन भारतीय समाज : यौन संस्कृति – महेंद्रनाथ श्रीवास्तव

23. समकालीन हिंदी नाटक : कथ्य और चेतना – डॉ. चंद्रशेखर

24. समकालीन हिंदी नाटक – जयदेव तनेजा

25. समसामायिक हिंदी नाटक – बहुआयामी व्यक्तित्व – सुंदरलाल कथूरिया

26. साठोत्तर हिंदी नाटक में त्रासदतत्व – डॉ. मंजूलादास

27. साठोत्तरी हिंदी नाटक – विजयकांतधर दुबे

28. साठोत्तरी हिंदी नाटकों में स्त्री–पुरूष संबंध – डॉ. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी

29. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में रंगमंचीयता – देवेंद्रकुमार गुप्ता

30. सृजन का सुखदु:ख – प्रतिभा अग्रवाल

31. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक – मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में – डॉ. रिताकुमार

32. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. गजानन सुर्वे

33. हिंदी के प्रतीक नाटक – रमेश गौतम

34. हिंदी के प्रतीक नाटक और रंगमंच – केदारनाथ सिंह

35. हिंदी नाटक और नाटककार – डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल, कु. नीलम मसंद

36. हिंदी नाट्य प्रयोग के संदर्भ में – डॉ. सुषम बेदी

37. हिंदी रंगकर्म: दशा और दिशा – जयदेव तनेजा

38. हिंदू विवाह मीमांसा – डॉ. प्रीति प्रभा गोयल

संस्कृत –

1. ऋग्वेद संहिता – श्री. दा. सातवलेकर

2. कालिदास ग्रंथावली (मालविकाग्नि मित्र) संपा. सीताराम चतुर्वेदी

3. मनुस्मृति – टीकाकार पण्डित श्री हरगोविंद शास्त्री

इ) कोशग्रंथ –

हिंदी –

1. मानक हिंदी कोश – प्र.संपा. रामचंद्र वर्मा

2. हिंदी साहित्यकोश – प्र.संपा. धीरेंद्र वर्मा

अंग्रेजी –

1. ए – संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी – सर मोनियर मोनियर विलियम्स

2. द रीडर्स डाइजेस्ट ग्रेट एनसाइक्लोपेडिक डिक्शनरी वॉल्यूम I

3. वेब्स्टर्स इन्टरनेशनल डिक्शनरी ऑव द इंग्लिश लैंग्वेज वॉल्यूम I